प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कृषि-वानिकी के लाभों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

विश्वविद्यालय में विश्व बैंक पोषित परियोजना आईडीपी के तहत 'कृषि-वानिकी : बदलती जलवायु का मुकाबला करने के लिए एक लचीली और टिकाऊ रणनीति' विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान देहारादून, डा. राजेश कौशल विशेषज्ञ के तौर पर उपस्थित थे।

डा. कौशल ने विद्यार्थियों को कृषि-वानिकी तथा कृषि वानिकी द्वारा प्राप्त परिस्थिकी लाभों जैसे मिट्टी के भौतिक-रासायनिक गुणों के विकास के बारे मे बताया साथ ही उन्होंने बताया की कृषि-वानिकी की कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन क्षमता कितनी होती है। उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों में पॉपलर आधारित कृषि-वानिकी और सबबुल आधारित कृषि-वानिकी के अनुकूलन, लाभ और महत्व के बारे में भी विस्तार से बताया। डा. कौशल ने देश के पहाड़ी क्षेत्रों विशेष कर उत्तराखंड में बांस की खेती के बढ़ते महत्व पर भी जानकारी दी। डा. कौशल ने बताया कि भारत के विभिन्न जलवायु पैटर्न मुख्यतः वर्षा पर आधारित कृषि देश को जलवायु परिवर्तन के लिए कैसे अधिक संवेदनशील है और किस प्रकार से कृषि-वानिकी प्रणाली के द्वारा जलवायु परिवर्तन का नियामन किया जा सकता है। अंत में डा. कौशल ने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक वास्तविकता है और कृषि योग्य एवं खराब भूमि पर कृषि-वानिकी का संभावित अनुकूलन इसे कम करने की क्षमता रखती है।

अधिष्ठाता कृषि, डा. एस.के. कश्यप ने कहा कि यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगा। निदेशक शोध, डा ए.एस. नैन ने कृषि-वानिकी के बहुमुखी लाभों के बारे में बताते हुए कहा कि यह केवल जलवायु परिवर्तन का नियामन ही नही करती बल्कि किसानों की आय को भी बढ़ाती है साथ ही कृषि-वानिकी से मृदा के स्वास्थ्य, मृदा कटाव एवं भौतिकी और रासायनिक गुणों को सुधरा जा सकता है। इस अवसर पर डा. सुमित चतुर्वेदी, डा. राजीव रंजन, डा. अलका आर्या, डा. यशु शंकर, अजीत छाबड़ा एवं प्रीति पांडे उपस्थित थे।

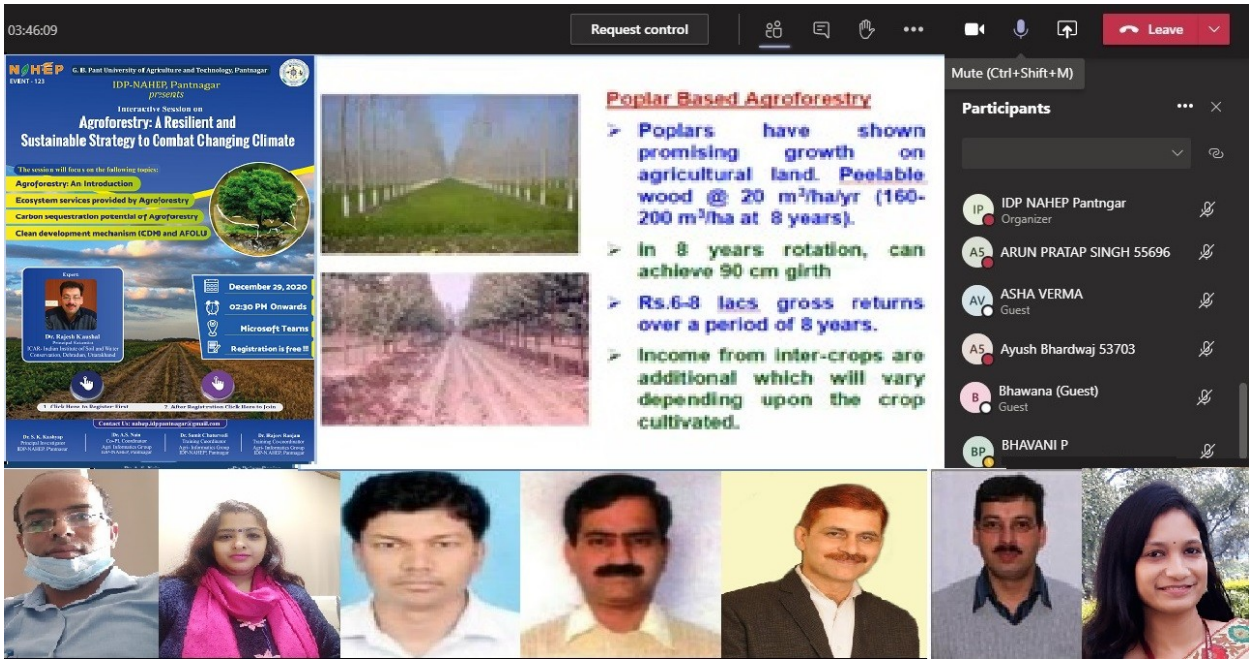

ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ, डा. राजेश कौशल एवं अन्य वैज्ञानिक।